भारत में आयुर्वेद

प्रलिम्सि के लयि:

आयुर्वेद, आयुर्वेद पहल।

मेन्स के लयि:

आयुर्वेद, आयुर्वेद में चुनौतयिाँ, सरकारी पहल।

चर्चा में क्यों?

आयुर्वेद **भारत की पारंपरकि चकित्सिा लगभग 3,000 वर्षों से प्रचलन में है** और लाखों भारतीयों की स्वास्थ्य देखभाल की ज़रूरतों को पूरा कर रही है।

- आयुर्वेद, लंबे समय से कुछ क्षेत्रों को संबोधति करने के लयि चुनौतयिों का सामना कर रहा है, जनि पर ध्यानाकर्षण करने की आवश्यकता है।

आयुर्वेद

- **परचिय:**
  - आयुर्वेद शब्द की उत्पत्त**आयु** और **वेद** से हुई है। आयु का अर्थ है जीवन, वेद का अर्थ है वज्ञिान या ज्ञान अर्थात् आयुर्वेद का अर्थ है जीवन का वज्ञिान।
    - आयुर्वेद सभी जीवति चीजों, मानव और गैर-मानवहेतु लाभकारी है।
    - यह तीन मुख्य शाखाओं में वभिाजति है:
      - **नर आयुर्वेद:** मानव जीवन से संबंधति।
      - **सत्व आयुर्वेद:** पशु जीवन और उसके रोगों से नपिटना।
      - **वृक्ष आयुर्वेद:** पौधे के जीवन, उसके वकिास और रोगों से नपिटना।
    - आयुर्वेद न केवल चकित्सिा की एक प्रणाली है बल्क**पूर्ण सकारात्मक स्वास्थ्य और आध्यात्मकि प्राप्तकि लयि जीवन का एक तरीका भी है।**
- **आयुर्वेद का अभ्यास:**
  - **वर्ष 1971 में स्थापति** भारतीय चकित्सिा परषिद **भारतीय चकित्सिा में उपयुक्त योग्यता स्थापति** करती है और आयुर्वेद, यूनानी तथा सद्धि सहति पारंपरकि अभ्यास के वभिन्नि रूपों को मान्यता देती है।
  - आयुर्वेद में **नवािरक और उपचारात्मक** दोनों पहलू हैं।
    - नवािरक घटक व्यक्तगित और सामाजकि स्वच्छता के सख्त संहति की आवश्यकता पर ज़ोर देता है, जसिका वविरण**व्यक्तगित, जलवायु और पर्यावरणीय आवश्यकताओं पर नर्भिर करता है।**
    - आयुर्वेद के उपचारात्मक पहलुओं में **हर्बल औषधयिों, बाह्य तैयारी, फजियोिथेरेपी और आहार का उपयोग शामलि है।**
      - यह आयुर्वेद का एक सद्धिांत है कप्रित्येक रोगी की व्यक्तगित आवश्यकताओं के लयि नवािरक और चकित्सिीय उपायों को अनुकूलति कयिा जाना चाहयि।
- **महत्त्व:**
  - आयुर्वेद में यह माना जाता है क**जीवति मनुष्य तीन हास्य (वात, पत्ति और कफ), सात मूल ऊतकों (रस, रक्त, मनसा, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र) और शरीर के अपशष्टि उत्पादों अर्थात् मल, मूत्र और स्वेद** का समूह है।
  - इस शरीर मैट्रक्सि तथा उसके घटकों की वृद्धएिवं क्षय इन तत्त्वों के मनोवैज्ञानकि तंत्र पर केंद्रति होते हैं और इसका संतुलन ही कसिी के स्वास्थ्य की स्थतिकि मुख्य कारण होता है।
  - आयुर्वेद प्रणाली में उपचार का दृष्टकिोण समग्र और व्यक्तगित है, जसिमें नवािरक, उपचारात्मक, शमन, उपचारात्मक तथा पुनर्वास संबंधी पहलू हैं।.
  - आयुर्वेद के प्रमुख उद्देश्य स्वास्थ्य को बनाए रखना और बीमारी की रोकथाम और बीमारी का इलाज करना है।

आधुनिक विश्व में आयुर्वेद के सामने प्रमुख चुनौतियाँ :

- **परंपरागत विचार:**
  - शारीरिक व्यायाम के लाभों पर आयुर्वेद कहता है, "आराम की भावना, बेहतर फिटनेस, आसान पाचन, आदर्श शरीर-वज़न और शारीरिक सुंदरता नियमित व्यायाम से प्राप्त होने वाले लाभ हैं।"
    - हालाँकि एक ही अभ्यास में शामिल शारीरिक और रोग संबंधी अनुमानों के लिये इस तरह की निरंतर वैधता का दावा नहीं किया जा सकता है।
  - मूत्र के विषय में आयुर्वेद कहता है कि आँतों से छोटी नलिकाएँ, मूत्र को मूत्राशय में ले जाती हैं। मूत्र निर्माण की इस सरलीकृत योजना की गुर्दे की कोई भूमिका नहीं होती है।
    - इस पुराने विचार का वर्तमान चिकित्सा शिक्षा में इतिहास के एक उपाख्यान के अलावा कोई स्थान नहीं हो सकता है।
- **आपातकालीन मामलों में अप्रभावी उपचार:**
  - तीव्र संक्रमण और शल्य चिकित्सा सहित अन्य आपात स्थितियों के उपचार में आयुर्वेद की अपर्याप्तता तथा चिकित्सीय में सार्थक शोध की कमी ने आयुर्वेद की सार्वभौमिक स्वीकृति को सीमित कर दिया है।
  - आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान जटिल है और इसमें क्या करें और क्या न करें बहुत अधिक हैं।
  - आयुर्वेदिक औषधियाँ काम करने और ठीक करने में धीमी होती हैं। प्रतिक्रिया या पूर्वानुमान की भविष्यवाणी करना असंभव नहीं तो मुश्किल है।
- **एकरूपता का अभाव:**
  - आयुर्वेद में चिकित्सा पद्धतियाँ एक समान नहीं हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि इसमें इस्तेमाल होने वाले औषधीय पौधे भूगोल और जलवायु एवं स्थानीय कृषि पद्धतियों के साथ भिन्न होते हैं।
  - आयुर्वेद के विपरीत आधुनिक चिकित्सा में रोगों को पूर्व निर्धारित समान मानदंडों के अनुसार वर्गीकृत और इलाज किया जाता है।
- **आयुर्वेदिक फार्मा द्वारा भ्रामक प्रचार:**
  - आयुर्वेदिक फार्माकोपिया उद्योग ने दावा किया कि इसकी निर्माण पद्धतियाँ क्लासिक आयुर्वेद ग्रंथों के अनुरूप थीं।
  - आयुर्वेदिक औषधियों की बेहतर बाज़ार अपील के लिये, औषधि कंपनियों ने पर्याप्त वैज्ञानिक आधार के बिना अपने आयुर्वेदिक उत्पादों के बारे में कई औषधीय दावों का प्रचार किया।
  - इससे समुदाय में औषधियों के प्रति प्रयोग और बढ़ गया और जीवनशैली में सुधार की आवश्यकता वाली बीमारियों का इलाज पॉली-फार्मेसी के साथ किया गया।

आयुर्वेद के विकास के लिये सरकार की पहलें:

- राष्ट्रीय आयुष मिशन
- आहार क्रांति मिशन
- आयुष क्षेत्र में नए पोर्टल
- **NCCR पोर्टल और आयुष संजीवनी ऐप**

आगे की राह:

- **रिवर्स फार्माकोलॉजी:**
  - इसे औषधियों में विकसित करने के लिये, ट्रांसडिसिप्लिनरी खोजपूर्ण अध्ययनों के माध्यम से प्रलेखित नैदानिक अनुभवों और अनुभवात्मक टिप्पणियों को लीड में एकीकृत करने के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है।
- **न्यू मिलेनियम इंडियन टेक्नोलॉजी लीडरशिप इनिशिएटिव (NMITLI):**
  - यह सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, अकादमिक और निजी उद्योग की सर्वोत्तम दक्षताओं का तालमेल करके भारत की मज़बूत स्थिति बनाए रखने का प्रयास करता है।
- **केरल मॉडल का अनुकरण:**
  - केरल आम जनसंख्या में प्रतिरक्षा में सुधार के तरीके के रूप में आयुर्वेद को बढ़ावा देता रहा है। यह आयुर्वेदिक योगों को बढ़ावा देता है और अपनी आबादी के सभी जनसांख्यिकी के लिये आयुर्वेद प्रथाओं की सिफारिश करता है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

प्र. भारत सरकार औषधि के पारंपरिक ज्ञान को औषधि कंपनियों द्वारा पेटेंट कराने से कैसे बचा रही है? (2019)

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ayurveda-in-india